



तुम्हारे मन को एक बगीचे जैसा समझा जा सकता है, जिसे या तो बुद्धिमानी से जोता जा सकता है या उसे लापरवाही से जंगली तौर पर बढ़ने दिया जा सकता है — परन्तु चाहे उसे जोता जाए या उसकी उपेक्षा की जाए, वह ज़रूर ही, और अवश्य ही; *फलीभूत होगा*। यदि कोई उपयोगी बीज उसमें नहीं बोए जाते, तो बेकार के खर-पतवार के बीज उसमें गिरेंगे और उसी प्रकार की उपज होगी।

जिस तरह से माली अपने बगीचों को जोतते हैं, उन्हें खर-पतवार से दूर रखते हैं, और उन फल-फूल को लगाते हैं जिनकी उन्हें चाह होती है, उसी प्रकार तुम्हें भी अपने मन रूपी बगीचे की देखभाल करनी चाहिए। अनुचित, बेकार और अशुद्ध विचारों को मन से निकाल फेंकना चाहिए और सही, उपयोगी और शुद्ध विचारों के पूर्ण फल और फूलों को पोषित करना चाहिए। इस प्रकार की प्रक्रिया का पालन करते हुए, तुम देर-सवेर यह ज्ञान पाओगे कि तुम अपनी आत्मा के प्रमुख माली हो, अपने जीवन के निर्देशक हो।

तुम अपने में विचार के नियमों को प्रकट कर पाते हो और सदा-बढ़ती सत्यता से यह समझ पाते हो कि कैसे विचार की शक्तियाँ और मन के घटक तुम्हारे चरित्र, परिस्थितियों और भाग्य का निर्माण करने में कार्यरत होते हैं।

विचार और चरित्र एक हैं, और क्योंकि वातावरण और परिस्थितियों द्वारा ही चरित्र स्वयं को प्रकट और पा सकता है, इसलिए तुम हर दम पाओगे कि तुम्हारे जीवन की बाहरी परिस्थितियाँ, तुम्हारी अन्तर-स्थिति के परस्पर संबन्ध और तालमेल में रहेंगी। इसका यह मतलब नहीं है कि किसी भी समय पर जैसी तुम्हारी परिस्थितियाँ हैं वे तुम्हारे पूरे चरित्र को प्रदर्शित करती हैं। इसका अर्थ है कि वह परिस्थितियाँ तुम्हारी विचारधारा के किसी ज़रूरी पहलू से, उस समय के लिए, इतना करीब से जुड़ी हैं कि वे तुम्हारी प्रगति के लिए अत्यावश्यक हैं।

आज तुम जहाँ हो वह तुम्हारी सत्ता के नियम के कारण ही है; वह विचार जो तुमने अपने चरित्र में समा रखा है वह तुम्हें यहाँ लाये हैं। तुम्हारे जीवन की संरचना में संयोग की कोई जगह नहीं है, परन्तु सब कुछ उस नियम का परिणाम है, जो कभी चूक नहीं सकता। यह बात उनके लिए उतनी ही सही है जो अपनी परिस्थितियों के तालमेल से अलगाव का अनुभव करते हैं, जितना कि उनके लिए जो परिस्थितियों से संतुष्ट रहते हैं।

एक प्रगतिशील और जागरूक सत्ता के रूप में तुम जहाँ पर हो वहाँ इसलिए हो जिससे कि सीख सको और आगे बढ़ सको, और जैसे तुम परिस्थिति में निहित आध्यात्मिक शिक्षण को सीख लेते हो, वह निकल जाती है और दूसरी परिस्थितियों के लिए जगह बनाती है।

तुम तब तक परिस्थितियों द्वारा मार खाते रहोगे जब तक तुम इसमें विश्वास करते रहोगे कि तुम बाहरी परिस्थितियों द्वारा प्रभावित प्राणी हो — परन्तु जब तुम्हें यह एहसास होगा कि तुम एक रचनात्मक शक्ति हो, और उस छिपी भूमि और बीज जिससे परिस्थितियाँ पनपती हैं, पर अपना अधिकार जमा सकते हो, तब तुम सही मायने में अपने स्वामी बन जाते हो।

वे समस्त लोग जिन्होंने आत्म-परिक्षण और आत्म-संयम का अभ्यास किया है, यह जानते हैं कि परिस्थितियाँ विचारों से ही पनपती हैं, क्योंकि उन्होंने यह देखा है कि उनकी परिस्थितियों में फेरबदल, उनकी मानसिक स्थिति में फेरबदल के सीधे अनुपात में होता है। यह सत्य है कि जब तुम उत्सुकता से अपने चरित्र की कमियों को दूर करने में स्वयं को लगा देते हो, तुम बहुत शीघ्रता से प्रगति करते हो और बहुत सारे परिवर्तनों से जल्दी ही गुज़रते हो।

आत्मा जो गुप्त रूप में चाहती है — जिससे प्रेम करती है और जिसका उसे भय है, उसको आकर्षित करती है। वह संजोयी हुई आकांक्षाओं की उँचाई तक पहुँचती है, और वह अनिश्चित, बार-बार प्रकट होने वाले भय की गहराईयों में गिर जाती है। परिस्थितियाँ वह माध्यम हैं जिसके द्वारा आत्मा स्वयं को प्राप्त करती है।

हर विचार-रूपी बीज जिसे मन में बोया जाता है या उसमें जड़ पकड़ने दिया जाता है, उपज देता ही है, और देर-सवेर किसी कार्य के रूप में फूलता है, उसमें परिस्थिति रूपी फल लगते हैं। अच्छे विचार अच्छा फल और बुरे विचार बुरा फल देते हैं।

परिस्थिति का बाहरी जगत विचार के अन्तर-जगत का निर्माण करता है, और दोनों ही प्रिय और अप्रिय बाहरी परिस्थितियाँ वे घटक हैं जो किसी व्यक्ति के लिए चरम अच्छाई का निर्माण करती हैं। अपनी फसल को स्वयं काटने वाले होने के नाते, तुम कष्ट और आनन्द दोनों से ही सीखते हो।

अपनी उन अन्तरतम इच्छाओं, आकांक्षाओं, विचारों का अनुसरण करते हुए, जिन्हें तुम अपने पर हावी होने देते हो, तुम अन्ततः अपने जीवन की बाहरी परिस्थितियों के रूप में उनकी पूर्णता तक पहुँचते हो। प्रगति और बैठ-बिठाव के नियम सब जगह लागू होते हैं।